पढ़ना, पढ़ने से आता है!

अरविन्द गुप्ता

दुनिया में करोड़ों लोगों ने पढ़ना सीखा है और इसके लिए वो विविध प्रणालियां प्रयोग करते हैं। कोई वर्णमाला से शुरू करता है तो कोई सम्पूर्ण वाक्यों से।

फ्रैंक स्मिथ दुनिया के जाने-माने भाषाविद् हैं। सत्तर के दशक में उन्होंने पढ़ने की प्रक्रिया पर हार्वर्ड विश्वविद्यालय में शोध किया। उनकी एक नायाब पुस्तक है 'रीडिंग' जिसमें उन्होंने पढ़ने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। इस निहायत उम्दा किताब में एक ही राजनैतिक संदेश है - 'पढ़ना, पढ़ने से आता है'। बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने 'पढ़ाई क्लब' की सिफारिश की। बच्चे सड़क चलते दुकानों पर लगे लेबिल पढ़ें, बोर्ड पर लगे इश्तहार पढ़ें, बस पर लगी तख्ती पढ़ें, फिल्मों के पोस्टर पढ़ें, लोकप्रिय पत्रिकाएं, अखबार और पुस्तकें पढ़ें तो बच्चे अपने आप ही 'पढ़ाई क्लब' के सदस्य बन जाएंगे।

मतलब समझना

अमरीका के महान शिक्षाविद् जॉन होल्ट ने एक बहुत रोचक प्रयोग के बारे में लिखा है। यह स्कूल शहर के आर्थिक रूप से सबसे गरीब इलाके में स्थित था। स्कूल में ज्यादातर अफ्रीकी मूल के अश्वेत बच्चे ही आते थे। इन बच्चों की सरकारी पाठ्य पुस्तकें पढ़ने में बिल्कुल रुचि नहीं थी। कई शिक्षकों ने इन किताबों से सिखाने की कोशिश की, बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, परंतु सभी प्रयास असफल रहे। तभी अचानक स्कूल में एक नई 'ट्रेनी' शिक्षका आई और उसने सारी तस्वीर ही बदल डाली। वो बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के नए तरीके खोज रही थी। उसके क्लास में अधिकांश गरीब अश्वेत बच्चे थे। उनके घरों में क्योंकि पुस्तकें थीं ही नहीं इसलिए उन्होंनें कभी पुस्तकें पढ़ी ही नहीं थीं। परंतु एक चीज ऐसी थी जिसका उनके जीवन में बाहुल्य था - और वो था संगीत। उस शिक्षका ने जो किया वो अत्यंत सरल था। उसने उनके लोकप्रिय गानों को मोटे अक्षरों में चार्ट-शीट्स पर लिखा और उन्हें कक्षा में टांग दिया। क्यों ये गाने बच्चों को कंठस्थ से इसलिए वो जल्द उन्हें पढ़ने भी लगे। पहली बार उन्हें लिखित शब्द का अपने जीवन से कुछ ताल्लुक नजर आया। चार्ट पर जो कुछ लिखा था उसमें उनकी जिंदगी की कशिश, वेदना, व्यथा और उनकी आकांशाएं गुंथीं थीं। लोकप्रिय गानों के चार्ट इन गरीब अश्वेत बच्चों की पढ़ाई में बहुत कारगर सिद्ध हुए।

सार्थकता और महत्व

पढ़ाई ऐसी हो जो छात्र के लिए जीवनदायी और सार्थक हो। अक्सर पाठ्यक्रम छात्र के जीवन पूरी तरह कटा होता है। इस हालत में छात्र उसमें कोई रुचि नहीं लेते। भारत में प्रौढ़ शिक्षा के अंतर्गत विकसित अधिकांश शैक्षिक सामग्री इसी प्रकार की है। किसान-मजदूरों के लिए लिखी गई पुस्तकों का उनके जीवन के शोषण से कुछ लेना-देना नहीं होता। इसी कारण ज्यादातर प्रौढ़-शिक्षण कक्षाएं केवल कागजों पर ही दौड़ती हैं। शिक्षण की शब्दावली भी स्कूल न गए लोगों की पुरजोर खिलाफत करती है। 'क' से 'कबूतर' के स्थान पर अगर 'कर्ज' होता, 'स' से 'सरस्वती' की बजाए अगर 'सूद' होता तो शायद ऐसी शब्दावली एक गरीब शोषित की जिंदगी में ज्यादा मायने रखती।

सिल्विया ऍश्टन वार्नर ने 24 साल तक न्यूजीलैंड में माओरी जनजाति के बच्चों के साथ काम किया। उन्होंने भाषा को सरल बनाने के लिए कक्षा की सभी वस्तुओं पर 'लेबिल' चिपकाए। 'पंखा', 'कुर्सी', 'मेज', 'दरवाजा', 'ब्लैकबोर्ड' पर लेबिल चिपकाए। क्योंकि बच्चे इन वस्तुओं को रोजाना देखते थे इसलिए जल्दी ही बच्चे की उन शब्दों के साथ दोस्ती भी हो गई और वो उन्हें पढ़ना सीख गए। सिल्विया इन बच्चों से रोजाना कोई भावनात्मक शब्द पूछतीं। कभी बच्चे कहते 'शराब' क्योंकि उनके पिता अक्सर शराब पीकर धुत्त होकर मां को मारते थे। फिर सिल्विया बच्चों से 'शराब' की कहानी सुनाने को कहतीं। तब बच्चे अपने घर की आप-बीते सुनाने लगते और उसे सुनाने हुए अक्सर बिलख कर रो पड़ते। सिल्विया बच्चों द्वारा सुनाई कहानी को उनके ही शब्दों में चार्टशीट पर लिख देतीं। और क्योंकि वो बच्चों की खुद की मुक्तभोगी दास्तां थी इसलिए बच्चे उसे आसानी से पढ़ने भी लगते। छह महीने में इस स्कूल में इस प्रकार की साठ सचित्र कहानियां लिखी गयीं। और कहानियां भी कैसी - बच्चों के जीवन का ताना-बाना!

क्रांतिकारी शिक्षक गिजुभाई

1930 के दशक में भावनगर, गुजरात में गिजुभाई ने भी शिक्षा में एक अनूठा प्रयोग किया। इसे नैशनल बुक ट्रस्ट ने 'दिवास्वप्न' नामक पुस्तक में छापा है। गिजुभाई रोजाना बच्चों को एक नई कहानी सुनाते। बच्चों को इसमें अपार आनंद आता और वो रोज नई-नई कहानियों की फरमाईश करते। शाम को बच्चे उन कहानियों पर नाटक रचते। इससे धीरे-धीरे बच्चों की भाषा पर पकड़ मजबूत हुई। अब उन्होंने 'डॉयलाग' रटना बंद कर दिए। अगर वो कुछ भूल जाते तो वहीं मौके पर नया 'डॉयलाग' रच देते। नए सत्र की शुरुआत में गिजुभाई ने बच्चों को नई पाठ्य पुस्तकें खरीदने से मना किया। उन्होंने कहा, 'हमारी कक्षा में पचास बच्चे हैं। सभी के पास एक जैसी पाठ्य पुस्तकें हों तो यह कितनी गलत बात होगी। इसलिए, तुम इस बार कोर्स की किताबें मत खरीदना। मुझे तीन किताबों के लिए पैसे देना। फिर मैं हर बच्चे के लिए तीन अलग-अलग सचित्र कहानियों की किताबें खरीद के लाऊंगा।' इस प्रकार गिजुभाई ने बिना किसी शासकीय अथवा वर्ल्ड बैंक की सहायता से - बच्चों के खुद के साधनों से एक क्लास-रूम लाइब्रेरी का गठन किया। उनका सपना था कि मेरे बच्चे 3 घिसी-पिटी सरकारी किताबें नहीं, वो 150 उम्दा किस्म की पुस्तकें पढ़ें!

गिजुभाई की पुस्तक 'दिवास्वप्न' शिक्षा पर अपने देश की सबसे मौलिक कृति है। गिजुभाई ने बच्चों को व्याकरण किस प्रकार सिखाई वो पद्धति भी बहुत रोचक है। अगर आपना भाषा सीखने की शुरुआत व्याकरण से की तो सुनिश्चित समझिए कि बच्चों को उस भाषा से आजीवन नफरत हो जाएगी! गिजुभाई अपने तरीके से हरेक मुश्किल काम को खेल में बदल देते थे। 'क्रियाएं' (वर्बस) सिखाने के लिए उन्होंने कागज की छोटी-छोटी पर्चियों पर 'क्रियाएं' लिखीं - जैसे कूदना, हंसना, सोना, चलना आदि। इन पर्चियों को मोड़कर एक टोकरी में रखा जाता। फिर बच्चे एक-एक करके आते टोकरी में से एक पर्ची निकालते और उसके निर्देश के अनुसार एक्टिंग करते। बाकी बच्चों को अटकलें लगाकर उस 'क्रिया' को बूझना होता। इस खेल में बच्चे सहजता से 'क्रियाएं' सीख जाते और इसमें उन्हें बहुत आनंद भी आता।